अध्याय 23

वाचा की पुस्तक (भाग 4)

वाचा की पुस्तक (20:22-23:33) न्याय, धार्मिक अवकाश व बलिदानों से संबंधित व्यवस्था के साथ समाप्त होता है। यह अध्याय प्रतिज्ञा की देश में प्रवेश करने के संबंध में कई निर्देश और प्रतिज्ञाएं भी जारी करता है।

यहाँ, जो परमेश्वर से संबंधित है (22:28-31) - अर्थात् जो न्याय का केंद्र है, वह अब मनुष्य की ओर स्थानांतरित हो जाता है। एक दूसरे के साथ न्यायपूर्ण तरीके से व्यवहार करना मनुष्य का कर्तव्य हो जाता है (23:1-9)।

आगे, परमेश्वर ने लोगों को सब्त वर्ष और सब्त दिन (23:10-13), तीन महान राष्ट्रीय पर्व (23:14-17) मनाने, और उसे ग्रहणयोग्य बलिदान चढ़ाने (23:18, 19) का निर्देश दिया है। इन व्यवस्थाओं में किसी प्रकार का दबाव व आज्ञा न मानने के लिए किसी भी प्रकार का दंड नहीं निर्धारित किया गया है। यह अध्याय इस्राएलियों का प्रतिज्ञा की देश में प्रवेश करने के साथ समाप्त होता है (20:20-33)।

न्याय की मांग (23:1-9)

न्यायालय में न्याय (23:1-3)

[1]"झूठी बात न फैलाना। अन्यायी साक्षी होकर दुष्ट का साथ न देना। [2]बुराई करने के लिये न तो बहुतों के पीछे हो लेना; और न उनके पीछे फिरके मुक़द्दमे में न्याय बिगाड़ने को साक्षी देना; [3]और कंगाल के मुक़द्दमे में उसका भी पक्ष न करना।"

आयतें 1-3. इन आयतों में लिखी व्यवस्था, न्यायालय परिसर से संबंध रखता है। प्राचीन इस्राएल में, किसी भी व्यक्ति का मुक़द्दमा चार प्रकार से हो सकता था। वह (1) अभियुक्त, (2) अभियोक्ता, (3) एक गवाह या (4) एक न्यायाधीश हो सकता था। मुक़द्दमा कभी भी हो सकता था और सामान्यता प्राचीनों के द्वारा नगर के फाटक पर न्याय चुकाया जाता था (व्यव. 21:19; 22:15; 25:7; यहोशू 20:4)। यह न्याय व्यवस्था सच्चे साक्षी और न्यायाधीशों द्वारा भेदभाव रहित

निर्णय पर अधिक ज़ोर देता है।

यह कानून व्यवस्था यह संभावना स्वीकार करती है कि एक गवाह या एक न्यायाधीश "झूठी सूचना दे सकता है" या फिर अनैतिक न्याय कर सकता है - जो नौवें आज्ञा का उल्लंघन होगा (20:16)। **झूठी साक्षी देने** की परीक्षा निम्न में से किसी एक अभिप्राय से हो सकता है: (1) कोई झूठी साक्षी बुरे विचारों या अपने लाभ के लिए दे सकता है। (2) झूठा गवाह लोगों के विचारों के द्वारा प्रभावित हो सकता है। (3) **कंगालों** के प्रति तरस के कारण कोई भी अनुचित न्याय दे सकता है। अभागों के प्रति दया के कारण, वह तथ्यों का अनदेखा कर सकता है या मुक़द्दमे के समय कंगालों को होने वाले हानि के कारण वह साक्षी को अधिक महत्व न देकर अपना न्याय सुना सकता था।

मूसा की व्यवस्था के अनुसार, इन सब परीक्षाओं का सामना किया जाना चाहिए। स्वयं लाभ के बावजूद, बहुमत की मान्यता या जिस व्यक्ति पर मुक़द्दमा चल रहा हो, उसकी प्रतिष्ठा की चिंता किए बिना, गवाह को सत्य बोलना था (देखें लैव्य. 19:15, 16)। परिणाम जो भी हो, मुक़द्दमे में भाग लेने वाले हरेक व्यक्ति को यह सुनिश्चित करना था कि न्याय चुकाया जा चुका है। इस प्रकार, जो परमेश्वर का अनुकरण करता है वह भेदभाव नहीं करता है (व्यव. 10:17, 18; प्रेरितों. 10:34, 35)।

शत्रु के प्रति न्याय (23:4, 5)

4"यदि तेरे शत्रु का बैल वा गदहा भटकता हुआ तुझे मिले, तो उसे उसके पास अवश्य फेर ले आना। 5फिर यदि तू अपने बैरी के गदहे को बोझ के मारे दबा हुआ देखे, तो चाहे उसको उसके स्वामी के लिये छुड़ाने के लिये तेरा मन न चाहे, तौभी अवश्य स्वामी का साथ देकर उसे छुड़ा लेना।"

आयतें 4, 5. कुछ वर्ग के लोगों को न्याय की अति आवश्यकता होती थी। सर्वप्रथम, इस्राएलियों को शत्रुओं के साथ मित्र भाव से व्यवहार करके निष्पक्ष होना चाहिए था। ऐसा कौन होगा जो अपने मित्र के **बैल** या **गधे** को जंगल में भटकते पाकर उसे न **लौटाए**? ऐसा कौन होगा जो अपने मित्र के **गधे** को भारी **बोझ के मारे दबा हुआ देखे** और उसका बोझ हल्का न करे? यह शत्रु एवं मित्र और जानवर एवं उसके स्वामी के लिए करना उचित होगा। आर. एलेन कोल ने लिखा, "इस संदर्भ में संभवतः *शत्रु* 'कानूनी विरोधी' हो सकता है। न्याय यह मांग करता है कि हम उसके साथ अन्य पड़ोसियों के समान ही व्यवहार करें, और उसके साथ शत्रुता का 'बदला' उसके असहाय जानवरों से न लें।"[1] ऐसा कार्य दया नहीं बल्कि न्याय होता था (देखें व्यव. 22:1-4; नीति. 25:21, 22)।

यद्यपि जानवरों के प्रति दयावान होना यहाँ अपेक्षित नहीं है, लेकिन यह अनुच्छेद यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि जानवरों के प्रति भी मानवता दिखानी चाहिए। यह सिद्धांत इससे भी प्रमाणित होता है कि सब्त मनुष्यों के साथ-साथ

जानवरों के लिए भी विश्राम दिन था।

अभागों का न्याय (23:6-9)

6"तेरे लोगों में से जो दरिद्र हों उसके मुकद्दमे में न्याय न बिगाड़ना। 7झूठे मुकद्दमे से दूर रहना, और निर्दोष और धर्मी को घात न करना, क्योंकि मैं दुष्ट को निर्दोष न ठहराऊंगा। 8घूस न लेना, क्योंकि घूस देखने वालों को भी अन्धा कर देता, और धर्मियों की बातें पलट देता है। 9परदेशी पर अन्धेर न करना; तुम तो परदेशी के मन की बातें जानते हो, क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे।"

न्याय का अनुप्रयोग जारी रखते हुए, ये आयतें दरिद्र, निर्दोष, और परदेशी इत्यादि लोगों को संबोधित करता है। इस व्यवस्था समूह के बीच घूस लेने की निषेधाज्ञा भी पाई जाती है।

आयत 6. दरिद्र के साथ न्यायालय के मामले में न्यायपूर्ण व्यवहार होना चाहिए था। आज के समान, उन दिनों में भी, जिनके पास पर्याप्त धन था, वे दरिद्रों की तुलना में आसानी से अपराधों से छूट जाते थे। धनी लोग बहुधा दरिद्रों का लाभ उठाते थे। फिर भी, इस व्यवस्था का संदेश यह था "तुम्हें इसलिए अनुचित नहीं करना है क्योंकि तुम इससे आसानी से बच जाते हो!" यह व्यवस्था किसी को भी **दरिद्रों का न्याय बिगाड़ने** से रोकता है।

आयत 7. इस्राएलियों को **निर्दोष और धर्मी को घात** करने के लिए मना किया गया था। संदर्भ के अनुसार इस प्रकार का कार्य करने का अर्थ अनुचित तरीके से निर्दोष और धर्मी को दोषी ठहराना था, परिणामस्वरूप इस कुकृत्य के कारण उसका प्राण जा सकता था; ऐसा करना हत्या करने के बराबर था।[2] परमेश्वर ने कहा कि वह निर्दोष के पक्ष में हस्तक्षेप करेगा और जो निर्दोष को घात करेगा वह उस दोषी को **नहीं छोड़ेगा**।

आयत 8. आगे इस्राएलियों को **घूस लेने के लिए** मना किया गया था क्योंकि घूस न्याय को बिगाड़ देता है; संभवतः घूस देने की प्रस्ताव के बारे में भी यही सिद्धांत लागू होता है। जबकि यह नियम कभी भी किसी भी अधिकारी के लिए लागू होता था, लेकिन वास्तविक रूप से यह इस्राएलियों के लिए न्यायालय परिसीमन में विशेष रूप से लागू होता था। इस्राएलियों के प्राचीनों में से चुने गए न्यायी उन लोगों के पक्ष में न्याय सुनाने की परीक्षा में गिर सकते थे जो उन्हें सबसे अधिक धन का प्रलोभन देता था (देखें व्यव. 16:18-20; 1 शमूएल 8:3; 12:3)।

आयत 9. इसके साथ ही, **परदेशी** का अनुचित लाभ उठाने के विरूद्ध भी व्यवस्था था। फिर, यह व्यवस्था संभवतः वैधानिक प्रणाली में उत्पीड़न के रूप में अधिक कार्य करता था। परदेशी जब इस्राएलियों के न्यायालय में लाए जाते थे तो उनको हानि उठानी पड़ती थी। इसलिए, इस्राएलियों को यह सुनिश्चित करना था कि उनका न्याय व्यवस्था निष्पक्ष हो। इस्राएलियों को परदेशियों की क्यों इतनी चिंता करनी थी? क्योंकि वे स्वयं **मिस्र** में **परदेशी** थे; उनकी दासता उनके बीच रहने वाले परदेशियों के प्रति लाभकारी सिद्ध होना चाहिए था (22:21)।

सब्त मनाना (23:10-13)

[10]"छः वर्ष तो अपनी भूमि में बोना और उसकी उपज इकट्ठी करना; [11]परन्तु सातवें वर्ष में उसको परती रहने देना और वैसा ही छोड़ देना, तो तेरे भाई बन्धुओं में के दरिद्र लोग उस से खाने पाएँ, और जो कुछ उनसे भी बचे वह बनैले पशुओं के खाने के काम में आए। अपनी दाख और जैतून की बारियों से भी ऐसे ही करना। [12]छः दिन तक अपना काम-काज करना, और सातवें दिन विश्राम करना ताकि तेरे बैल और गदहे सुस्ताएँ, और तेरी दासियों के बेटे और परदेशी भी अपना जी ठंडा कर सकें। [13]जो कुछ मैं ने तुम से कहा है उस में सावधान रहना; और दूसरे देवताओं के नाम की चर्चा न करना, वरन् वे तुम्हारे मुँह से सुनाई भी न दें।"

वाचा संहिता की समाप्ति पर, मनुष्य का परमेश्वर के साथ संबंध पर अधिक जोर दिया गया है। निम्न लिखित कुछ आज्ञाएं चौथे आज्ञा का विस्तृत विश्लेषण करते हैं: "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना" (20:8)।

आयतें 10, 11. ये आयतें, सब्त की आज्ञा, जो **सातवें वर्ष** लागू होता था, का विस्तारीकरण है, अर्थात् यह सब्तकालीन वर्ष की ओर संकेत करता है। **छः वर्षों तक** इस्राएलियों को अपने **भूमि** पर खेती करना था लेकिन सातवें वर्ष उनको अपने खेतों को **परती छोड़ देना** था। उस वर्ष उस भूमि पर जो अपने आप उगे, सबसे पहले तो उसे उस देश के दरिद्रों के लिए छोड़ देना था और जो बचे वह बनैले पशुओं के खाने के काम आते। तो इस वर्ष इस्राएली लोग अपना जीवन यापन कैसे करते? उनको छठे वर्ष पर्याप्त उपज की आशा रखनी चाहिए थी ताकि उसके द्वारा सातवें वर्ष का जीवन यापन उसी से हो सके (लैव्य. 25:20-22)। इस वर्ष इस्राएलियों को (1) भूमि, दरिद्रों, और जानवरों पर परमेश्वर की अनुग्रह की आशा करनी चाहिए थी और (2) यह विश्वास कि परमेश्वर उनको छठे वर्ष इतना उपज दे कि सातवें वर्ष फसल उगाने और खेती करने की आवश्यकता न पड़े।

आयत 12. यह आयत सब्त की आज्ञा दोहराता है (20:9, 10), इसके साथ यह भी जोड़ा गया है कि इस दिन का उद्देश्य पालतू पशु, दास, और विदेशी भी **सुस्ता** सकें (देखें व्यव. 5:14)। सब्त मनाने का उद्देश्य मानवतावाद का अभ्यास करना है।

आयत 13. सब्त खण्ड **दूसरे देवताओं का नाम लेने** से मना करने के साथ समाप्त होता है। यहोवा नहीं चाहता था कि इस्राएली लोग दूसरे देवताओं की अस्तित्व माने (20:3)। इससे भी बढ़कर, वह यह नहीं चाहता था कि वे उन देवताओं के नाम से शपथ खाएं या उनके नाम से प्रार्थना करें (यहोशू 23:7)।

तीन वार्षिक पर्व (23:14-17)

[14]"प्रति वर्ष तीन बार मेरे लिये पर्व मानना। [15]अख़मीरी रोटी का पर्व मानना; उस में मेरी आज्ञा के अनुसार अबीब महीने के नियत समय पर सात दिन तक

अख़मीरी रोटी खाया करना, क्योंकि उसी महीने में तुम मिस्र से निकल आए। और मुझ को कोई छूछे हाथ अपना मुँह न दिखाए। 16और जब तेरी बोई हुई खेती की पहिली उपज तैयार हो, तब कटनी का पर्व मानना। और वर्ष के अन्त में जब तू परिश्रम के फल बटोर के ढेर लगाए, तब बटोरन का पर्व मानना। 17प्रति वर्ष तीनों बार तेरे सब पुरूष प्रभु यहोवा को अपना मुँह दिखाएं।"

वाचा की यह पुस्तक स्वतः ही सब्त मनाने के साथ-साथ इस्राएलियों को तीन वार्षिक पर्व मनाने के लिए प्रेरित करता है: अख़मीरी रोटी का पर्व, कटनी का पर्व, और बटोरन का पर्व। ये तीनों पर्व फसल की कटनी और इस्राएल की बड़ी ऐतिहासिक घटना से संबंधित है (देखें 34:18-26; लैव्य. 23; व्यव. 16:1-17)।

आयत 14. यह खण्ड इस्राएलियों को **प्रति वर्ष तीन बार पर्व मनाने** पर जोर देकर प्रारंभ और समाप्त होता है (23:14, 17)। चौदहवीं आयत की सामान्य आज्ञा कि **तुम मेरे लिए पर्व मनाना** का विस्तारीकरण आयत 17 में पाया जाता है: "तेरे सब पुरुष प्रभु यहोवा को अपना मुँह दिखाएं।"

आयत 15. अख़मीरी रोटी का पर्व इस्राएलियों को **मिस्र** से छुटकारे का संस्मरण कराता है (12:17-20)। **अख़मीरी रोटी खाना** उन्हें यह स्मरण दिलाता है कि उन्होंने मिस्र देश इतनी फुर्ती से छोड़ा था कि अपने गूंधे आटे को फूलने भी नहीं दिया था। इस पर्व के पश्चात फसह का पर्व आता है और "जौ की कटनी से प्रारंभ होकर, अबीव जो प्रथम महीना (मार्च के मध्य से अप्रैल के मध्य तक) होता है, के पंद्रहवें दिन से लेकर इक्कीसवें दिन तक मनाया जाता था।"[3] लोगों को यहोवा के सम्मुख छूछे हाथ नहीं आना चाहिए था; "उनको अपने फसल का प्रथम फल याजक के सामने लाना था" (लैव्य. 23:10)।

आयत 16. कटनी का पर्व "अठवारों का पर्व" भी कहलाता है (34:22)। यह "अख़मीरी रोटी के पर्व के सात सप्ताह पश्चात, सीवान महीने के छटे दिन, जो तीसरा महीना (मध्य मई से मध्य जून तक) होता था, मनाया जाता था। यह पर्व सीनै पर्वत पर व्यवस्था दिए जाने का संस्मरण कराता है।"[4] इस पर्व पर, इस्राएलियों को उनके गेहूँ की कटनी के **प्रथम फल** चढ़ाने की आज्ञा दी गई थी (34:22; लैव्य. 23:16, 17)। नया नियम में "कटनी के पर्व" को "पेन्तेकुस्त का दिन" कहा गया है (प्रेरितों. 2:1; 20:16; 1 कुरिं. 16:8) क्योंकि यह फसह के पचास दिन पश्चात हुआ था। "पेन्तेकुस्त" यूनानी शब्द πεντήκοντα *(पेंटेकोंटा)* से अवतरित है जिसका अर्थ "पचास" है (देखें लैव्य. 23:16)।

बटोरन का पर्व, "सातवाँ महीना, अर्थात् तीशरी (मध्य सितम्बर से मध्य अक्टूबर) के पंद्रहवें दिन से बाईसवें दिन तक मनाया जाता था, जब दाख की बारी या बगीचे की कटनी की जाती थी।"[5] यह पर्व कृषि को महत्व देने के साथ-साथ, "निर्गमन के बाद जंगल की यात्रा और व्यवस्था दिए जाने की महत्वता का संस्मरण कराती है।"[6]

इसे "झोपड़ियों का पर्व" या "तम्बू" भी कहा जाता था (लैव्य. 23:34; व्यव.

16:13; 31:10; देखें NIV)। यह नाम इस तथ्य से लिया गया है कि परमेश्वर के लोग जब मिस्र से छुड़ाए गए थे तो वे "तम्बुओं" में वास करते थे। इस पर्व के दौरान, इस्राएलियों को "तम्बुओं में वास" करने की आज्ञा दी गई थी ताकि वे अपने जंगल की यात्रा स्मरण रख सकें (लैव्य. 23:40-43)। चूँकि सामान्य कैलेंडर शरद ऋतु से प्रारंभ होता था, इसलिए यह पर्व **वर्ष के अंत में** मनाया जाता था; जो कृषि वर्ष की समाप्ति चिन्हित करता था।

आयत 17. इस अवसर पर सभी **पुरुष** यहोवा के भवन में **यहोवा को अपना मुख दिखाते थे**। दूसरे शब्दों में, वर्ष में **तीन बार** इस्राएली **पुरुषों** को इन राष्ट्रीय पवित्र सभाओं में उपस्थित होना था। इन पर्वों का दिशा-निर्देशन इस्राएलियों को न केवल उनके जिम्मेदारियां स्मरण दिलाती थी बल्कि यह उनके आशा को पुनर्जागृत करती थी, क्योंकि वे इस्राएलियों की यात्रा का सफलतापूर्वक समाप्ति का प्रतीक हैं। इस्राएली लोग अपनी भूमि पर फसलों का पर्व मनाने की आशा रख सकते थे।

बलिदानों से संबंधित व्यवस्था (23:18, 19)

[18]"मेरे बलिपशु का लहू ख़मीरी रोटी के संग न चढ़ाना, और न मेरे पर्व के उत्तम बलिदान में से कुछ सबेरे तक रहने देना। [19]अपनी भूमि की पहली उपज का पहला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना। बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना।"

यह संक्षिप्त खण्ड इस्राएलियों का परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करता है। यह व्यवस्था कि बलिदानों के साथ क्या किया जाना चाहिए था और क्या नहीं किया जाना चाहिए था, के बारे में वार्ता करता है। यह व्यवस्था इससे पहले खण्ड में वर्णित पर्व के संबंध में विश्लेषण प्रस्तुत करता है (23:14-17)। 34:25, 26 में वर्णित व्यवस्था को अल्प परिवर्तन के साथ दोहराया गया है।

आयत 18. इस आयत की दोनों व्यवस्था में नकारात्मक आज्ञा है। पहला नकारात्मक आज्ञा यह है: **"मेरे बलिपशु का लहू ख़मीरी रोटी के संग न चढ़ाना।"** इससे पहले अख़मीरी रोटी का पर्व का वर्णन किया गया है (23:15)। इस दौरान, इस्राएलियों को अपने बीच से हर प्रकार का ख़मीर हटाना था (12:15, 19, 20, 34, 39; 13:3, 7)। इसके साथ ही, परमेश्वर ने बलिपशु के साथ अख़मीरी रोटी चढ़ाने का आदेश भी दिया था (29:1, 2, 22, 23; लैव्य. 2:4, 5; 6:14-16; 7:12; 8:2, 26)। उसने यह कहकर मूसा को निर्देश दिया, "कोई अन्नबलि जिसे तुम यहोवा के लिये चढ़ाओ, ख़मीर मिलाकर बनाया न जाए; तुम कभी हवन में यहोवा के लिये ख़मीर और मधु न जलाना" (लैव्य. 2:11)। कुछ ऐसे संदर्भ भी पाये जाते हैं जिसमें आराधक परमेश्वर को भेंट चढ़ाने के लिए ख़मीरी रोटी भी लाते थे। लेकिन इन रोटियों को वेदी पर नहीं जलाया जाना चाहिए था; बल्कि उन रोटियों को याजक खाते थे (लैव्य. 7:13, 14; 23:17, 20)। संभवतः ख़मीरी रोटी को

पशुबलि के साथ वेदी पर नहीं चढ़ाया जाता था क्योंकि ख़मीर एक भ्रष्ट शक्ति के रूप में देखा जाता था (12:15 की टिप्पणी देखें)।

दूसरा नकारात्मक आज्ञा यह है **"और न मेरे पर्व के उत्तम बलिदान में से कुछ सबेरे तक रहने देना।"** जॉन आई. डरहैम के विश्लेषण के अनुसार इसका अर्थ यह हो सकता है: "उत्तम बलिदान केवल यहोवा का है और यह केवल उसी को ही चढ़ाया जाना चाहिए था।"[7] बलिदान से संबंधित व्यवस्था की यह मांग थी कि जानवर की "चरबी" (חֵלֶב, *खेलेव)* को वेदी पर आग के द्वारा चढ़ाया जाना चाहिए था (29:13, 22-25; लैव्य. 3:3, 4, 9, 10)। लोगों को यह निर्देश दिया गया था कि "सभी चरबी (उत्तम बलिदान) यहोवा का है" और "तुम चरबी और लहू कभी न खाओ" (लैव्य. 3:16, 17)।

दूसरा विश्लेषण यह है कि "मेरे पर्व का उत्तम बलिदान" फसह का मेम्ना है, जो पर्व का सबसे "बढ़िया" भाग है।[8] इस विश्लेषण को इसके समानांतर अनुच्छेद का समर्थन मिला है, "और न फसह के पर्व के बलिदान में से कुछ सबेरे तक रहने देना" (34:25)। इसके साथ ही, वाक्यांश "सबेरे तक रहने देना" फसह के संबंध में पहले दिए गए निर्देश का संस्मरण है (12:10)। यदि फसह के मेम्ने के संदर्भ में कहा जाए, तो संभवतः पूरा अठारहवीं आयत फसह और अख़मीरी रोटी से संबंधित है (देखें व्यव. 16:3, 4)।

आयत 19. यह आयत सकारात्मक अपेक्षा के साथ प्रारंभ होता है: इस्राएलियों को कहा गया था कि वे **अपनी भूमि की पहली उपज का पहला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आएं**। इससे पहले कि वे अपने लिए कुछ बचा कर रखे या अपने भविष्य के लिए कुछ बचाए, उन्हें सबसे पहले अपने उपज का सबसे अच्छा भाग यहोवा को चढ़ाना था। यह आज्ञा पिछले पर्व से संबंधित है (23:14-17) जिसका विभिन्न पर्वों से संबंध था - जौ, गेहूँ, और फल इत्यादि। ये वस्तुएं याजकों एवं उनके परिवारों को सहयोग देने के लिए था (गिनती 18:12, 13; व्यव. 18:3-5)।

इस आयत के दूसरे भाग में एक पेचीदा बात है: "**बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना"** (देखें 34:26; व्यव. 14:21)। जिस बात की अपेक्षा की गई थी वह स्पष्ट था; इसकी क्यों अपेक्षा की गई थी वह और भी अधिक कठिन बात था। इसका विभिन्न विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। एक विश्लेषण यह है कि एक बकरी के बच्चे को उसकी माता के दूध में पकाना क्रूरता होगा।[9] सबसे सामान्य और सर्वोत्तम विश्लेषण यह है कि ऐसा करने के लिए इस्राएलियों को इसलिए मना किया गया था क्योंकि मूर्तिपूजक कनानी लोग ऐसा ही किया करते थे। अम्बरटो केसुटो के अनुसार,

> हम उगारिटिक पाठ से यह जानते हैं कि कनानी लोग पर्वों के दौरान भूमि की उपजाऊ बनाए रखने के लिए ऐसा भोज तैयार करते थे। उगारिटिक पटिका में 'देवता मनभाव और सुन्दर' अनुच्छेद पर ऐसा लिखा है (चौदहवीं पंक्ति): ... 'बकरी के बच्चे को दूध में और मेम्ने को मक्खन में पकाना।' बद्दू लोगों के मध्य

आज भी जानवरों के छोटे बच्चों को दूध में पकाने की परंपरा पाई जाती है।[10]

यदि इस्राएली लोग इस प्रकार के अभ्यास में संलग्न होते हैं, तो दूसरों को ऐसा प्रतीत होगा कि उन्होंने कनानियों का धर्म अपना लिया है। ऐसी अपेक्षा पिछली आयत 19 से की जा सकती है। यदि ऐसा है तो बकरी के बच्चे को जानवरों के प्रथम फल के बलिदान के रूप में समझा जाएगा।

कालांतर में यहूदी धर्म के बारे में नहूम एम. सारना ने लिखा, "बकरी के बच्चे को उसकी माता के दूध में पकाने की निषेधाज्ञा, मांस और दूध को मिश्रित करने की विधि को विधिबहिष्कृत करना था (जिसका अर्थ सभी डेरी उत्पाद से है)।"[11] परिणामस्वरूप, कुछ यहूदी लोग मांस और डेरी उत्पाद को अलग-अलग रेफ्रीजिरेटर में रखते हैं और वे मांस और डेरी उत्पाद को एक साथ एक समय के भोजन में नहीं खाते हैं। 23:19 में दिया गया व्यवस्था इस प्रकार की अभ्यास का कारण नहीं बताता है।

उपसंहार: प्रतिज्ञा की देश में प्रवेश (23:20-33)

निर्गमन 23:20-33 को वाचा की पुस्तक का उपसंहार समझा जा सकता है, जिसमें अतिरिक्त व्यवस्था नहीं पाई जाती है। बल्कि, यह इस्राएलियों का प्रतिज्ञा की देश की ओर यात्रा और उस देश में प्रवेश के बारे में बताता है। इस खण्ड में प्रतिज्ञाएं और खतरे लोगों से यही कहती है कि वे ज्यों ही आगे की ओर बढ़ते हैं तो उन्हें विश्वासयोग्य बने रहने की आवश्यकता है।

स्वर्गदूत की अगुआई (23:20-23)

[20]"सुन, मैं एक दूत तेरे आगे आगे भेजता हूँ जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा, और जिस स्थान को मैं ने तैयार किया है उसमें तुझे पहुँचाएगा। [21]उसके सामने सावधान रहना, और उसकी मानना, उसका विरोध न करना, क्योंकि वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा; इसलिये कि उसमें मेरा नाम रहता है। [22]यदि तू सचमुच उसकी माने और जो कुछ मैं कहूँ वह करे, तो मैं तेरे शत्रुओं का शत्रु और तेरे द्रोहियों का द्रोही बनूँगा। [23]इस रीति मेरा दूत तेरे आगे आगे चलकर तुझे एमोरी, हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिब्बी, और यबूसी लोगों के यहाँ पहुँचाएगा, और मैं उनका सत्यानाश कर डालूँगा।"

आयतें 20, 21. परमेश्वर ने **एक दूत उनके आगे-आगे भेजने** की प्रतिज्ञा की। स्वर्गदूत **मार्ग में** उनकी **रक्षा** करेगा, और परमेश्वर उनको उस देश में **पहुँचाएगा** जो उसने उनके लिए **तैयार किया** है। वह इस्राएल का मार्ग दर्शन करेगा और उनको **उसका आज्ञा मानना होगा**। इसके साथ ही यदि इस्राएल उसका आज्ञाकारी रहेगा तो वह उनके अपराध क्षमा करेगा; लेकिन यदि वे आज्ञाकारी नहीं रहे तो वह उनको क्षमा नहीं करेगा। इस्राएल को उसके सम्मुख **सावधान रहना होगा** और

उसका वचन मानना होगा, और **उसका विरोध नहीं करना है**।

यह स्वर्गदूत (מַלְאָךְ, *मलाक*) कौन था? क्योंकि इब्रानी शब्द *मलाक* का अर्थ "संदेशवाहक" होता है, तो इसकी पहचान करने की कई संभावनाएं हैं।

एक संभावना यह है कि वह कोई *मनुष्य संदेशवाहक* रहा होगा, या फिर परमेश्वर का प्रतिनिधि रहा होगा। कुछ यहूदी टीकाकारों का मानना है कि सर्वप्रथम यह स्वर्गदूत मूसा था और तत्पश्चात यहोशू हुआ। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मूसा ने वह कार्य किया जिसे एक स्वर्गदूत ने इस्राएलियों के लिए किया होता। फिर भी, इस अनुच्छेद से ऐसा नहीं लगता है कि यह संदेशवाहक कोई मनुष्य रहा होगा। आर. एलेन कोल के अनुसार सर्वप्रथम स्वर्गदूत का वर्णन मनुष्य संदेशवाहक जैसा प्रतीत होता है। फिर भी, इक्कीसवीं आयत कहता है **"उसमें मेरा नाम रहता है,"** "से यह जान पड़ता है कि 'संदेशवाहक' कोई दैवीय शक्ति है, क्योंकि परमेश्वर का नाम उसमें प्रकट किया गया है अतः इसमें परमेश्वर की उपस्थिति दिखाई देती है।"[12]

दूसरी संभावना यह है कि स्वर्गदूत कोई *स्वर्गीय प्राणी* रहा होगा, क्योंकि इस "स्वर्गदूत" शब्द का शाब्दिक अर्थ यही दर्शाता है। इस दृष्टिकोण के पक्ष में यह तथ्य प्रमाणित होता है कि इस संदर्भ (23:23) में और अन्य संदर्भों (32:34; 33:2) में इस शब्द की व्याख्या उचित अर्थ ठहरता है।

तीसरी संभावना यह है कि स्वर्गदूत कोई *ईश्वर* रहा होगा। दूसरे शब्दों में परमेश्वर का स्वर्गदूत, स्वयं परमेश्वर ही रहा होगा। इस व्याख्या का पक्ष यह है कि "उसमें परमेश्वर का नाम" था। प्रमाणित रूप से, स्वर्गदूत के पास पाप क्षमा करने का विकल्प था, जो केवल परमेश्वर ही कर सकता था। इससे भी बढ़कर, निर्गमन 3 का "यहोवा का दूत" निस्संदेह स्वयं परमेश्वर का प्रकटीकरण था (3:2, 3 की टिप्पणियां देखें)। जॉन आई. डरहैम ने लिखा, "[स्वर्गदूत] स्वयं यहोवा का व्यक्तित्व व उपस्थिति का अभिव्यक्ति है" और "निर्गमन 1-20 की वृतांत में की गई प्रतिज्ञा और स्वयं उसकी उपस्थिति का प्रमाण का समर्थन करता है।"[13]

चौथी और सबसे नज़दीकी संभावना यह है कि स्वर्गदूत *देहधारण पूर्व वचन* है, जो ईश्वरत्व का दूसरा व्यक्तित्व है। इस व्याख्या के पक्ष में यह तर्क दिया जाता है कि पुराने नियम के कई अनुच्छेदों में, "यहोवा के स्वर्गदूत" की पहचान यहोवा के साथ और उससे भिन्न की गई है। इस प्रकार के प्रमाणों का ध्यान रखते हुए जे. एलेक मोत्यर ने लिखा,

> बाइबल में केवल एक ही ऐसा व्यक्तित्व है जो यहोवा के समान और जो उससे भिन्न दर्शाया गया है। वह जो, ईश्वरत्व की पूरी तत्व और विशेषाधिकार त्यागे बिना या ईश्वरीय पवित्रता को कम किए बिना, पापियों का साथ दे सके और जो, परमेश्वर के क्रोध को स्वीकार करते हुए, उसके दया का श्रेष्ठ प्रदर्शन कर सके। पुराने नियम में दर्शाया गया स्वर्गदूत ऐसा ही है और परिणामस्वरूप, जिसके बारे में बार्टन पेन बेहिचक कहते हैं, "इस अद्वितीय स्वर्गदूत का प्रकाशन … की सराहना केवल देहधारण पूर्व यीशु मसीह के रूप में ही की जा सकती है।"[14]

स्पष्ट रूप से, यदि इस स्वर्गदूत का संदर्भ देहधारण पूर्व वचन से है, तो इस तथ्य को केवल वचन का देहधारण पश्चात की घटना के द्वारा ही समझा जा सकता है (यूहन्ना 1:1, 14)।

चाहे स्वर्गदूत ईश्वर (या देहधारण पूर्व वचन), एक स्वर्गीय प्राणी रहा हो, या एक संदेशवाहक मनुष्य रहा हो, संदेश एक ही था। इस्राएलियों को एक सुसमाचार मिला कि परमेश्वर उनका मार्गदर्शन करेगा, उनकी रक्षा करेगा और उनके पाप क्षमा करेगा - और अंततः वह उन्हें प्रतिज्ञा का देश देगा। इसके बदले, इस्राएल को उसका आदर करना होगा। "उसके सामने सावधान रहना" यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि स्वर्गदूत का आज्ञा न मानने से उनका विनाश हो सकता है।

आयतें 22, 23. इस अध्याय का यह भाग एक प्रतिज्ञा के साथ समाप्त होता है: यदि इस्राएली लोग सचमुच स्वर्गदूत के दिशा निर्देशन का पालन करते हैं तो परमेश्वर उनके साथ रहेगा। वह उनके **शत्रुओं** का **शत्रु होगा**, वह उस **देश** में उनको ले जाएगा, उन सभी लोगों को **नाश करेगा** जो वहाँ रहते हैं - **एमोरी, हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिब्बी, और यबूसी** (3:8 की टिप्पणियां देखें)।

मूर्तिपूजा के विरूद्ध चेतावनी (23:24)

24"उनके देवताओं को दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना, और न उनके से काम करना, वरन् उन मूरतों का पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना, और उन लोगों की लाटों को टुकड़े टुकड़े कर देना।"

आयत 24. उस देश में रहने वाले लोगों के बारे में जब बातचीत की जाती है तो व्यवस्था कनानियों के देवी-देवताओं की उपासना करने के लिए मना करता है। इस्राएलियों को आदेश दिया गया था कि न तो वे उनके **देवताओं को दण्डवत करें और न ही उनकी उपासना करें**; उनको कनानी लोगों जैसे जीवन यापन नहीं करना था। इसके साथ ही, उनको उनके **मूर्तियों** को गिराना था और **लाटों को टुकड़े टुकड़े कर देना था**। यहाँ लाटों (מַצֵּבָה, *मत्सेवा)* का अर्थ कनानियों के वेदियों पर सीधे गाड़े गए पत्थर थे। इस पत्थर का ऊपरी भाग अक्सर गोलाकार होता था, जिसकी पहचान किसी देवता से की जाती थी जो आमतौर पर नर देवता होता था। इस प्रकार के खम्भों का वर्णन लकड़ी के बने अशेरा के पास भी पाया जाता है जो उर्वरत्व देवी का प्रतीक माना जाता था (34:13; व्यव. 7:5; 12:3; 2 राजा 17:10; 18:4; 21:3; 23:14, 15)। भूगर्भवेत्ताओं ने पलिस्तीन में इस प्रकार के कई खम्भों की खोज की है।[15]

आज्ञाकारी बने रहने पर भरपूर आशीष (23:25-31)

25"तू अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा, और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा। 26तेरे देश में न तो किसी का गर्भ गिरेगा और न कोई बाँझ होगी; और तेरी आयु मैं पूरी करूँगा। 27जितने लोगों के

बीच तू जाएगा उन सभों के मन में मैं अपना भय पहले से ऐसा समवा दूँगा कि उनको व्याकुल कर दूँगा, और मैं तुझे सब शत्रुओं की पीठ दिखाऊँगा। 28और मैं तुझ से पहले बर्रों को भेजूँगा जो हिब्बी, कनानी, और हित्ती लोगों को तेरे सामने से भगा के दूर कर देंगे। 29मैं उनको तेरे आगे से एक ही वर्ष में न निकाल दूँगा, ऐसा न हो कि देश उजाड़ हो जाए, और बनैले पशु बढ़कर तुझे दुःख देने लगें। 30जब तक तू फूल फलकर देश को अपने अधिकार में न कर ले तब तक मैं उन्हें तेरे आगे से थोड़ा करके निकालता रहूँगा। 31मैं लाल समुद्र से लेकर पलिश्तियों के समुद्र तक और जंगल से लेकर महानद तक के देश को तेरे वश में कर दूँगा; मैं उस देश के निवासियों को भी तेरे वश में कर दूँगा, और तू उन्हें अपने सामने से बरबस निकालेगा। 32तू न तो उनसे वाचा बाँधना और न उनके देवताओं से। 33वे तेरे देश में रहने न पाएँ, ऐसा न हो कि वे तुझ से मेरे विरुद्ध पाप कराएँ; क्योंकि यदि तू उनके देवताओं की उपासना करे, तो यह तेरे लिये फंदा बनेगा।"

आयतें 25, 26. परमेश्वर के लोगों को केवल **यहोवा** ही **की उपासना करनी** थी। यदि उन्होंने ऐसा किया तो वह उन्हें **अन्न जल** देकर, अच्छा स्वास्थ्य (**रोग** दूर करके), गर्भ और गर्भ का फल देकर (गर्भपात और बांझपन दूर करके), दीर्घायु और विजय देकर आशीषित करेगा।

आयतें 27, 28. परमेश्वर इस्राएलियों के आगे-आगे अपना **भय** समावेगा, और उनके **शत्रुओं** को **व्याकुल** कर देगा। वह इस्राएलियों के आगे उस देश में **बर्रे** भेजेगा ताकि वहाँ के लोग उनके सामने से भाग जाएं। क्या ये वक्तव्य एक ही बात की ओर संकेत करता है? परमेश्वर का "भय" संभवतः इस्राएलियों का मिस्र से सामर्थशाली छुटकारे की ओर संकेत करता है (देखें 15:14-16),[16] वस्तुतः, इस बात ने इस्राएलियों को कनान पर विजय प्राप्त करने में सहायता की (यहोशू 2:8-11)। कुछ टीकाकारों का मानना है कि "बर्रे" परमेश्वर की सामर्थ इस्राएलियों की ओर प्रगट करने का दूसरा तरीका था। इब्रानी बाइबल में बर्रे (צִרְעָה, *सीरा)* शब्द केवल तीन बार ही प्रयोग किया गया है (23:28; व्यव. 7:20; यहोशू 24:12) और इसका अर्थ अनिश्चित है और इसका अनुवाद अलग-अलग प्रकार से किया जा सकता है, जैसे - "बर्रे," "भय," "महामारी," और "उदासी, निराशा" इत्यादि।[17] अन्य लोगों ने "बर्रे" का अनुवाद मिस्र की सेना के रूप में किया है जो यह मानते हैं कि पहले वे कनान देश गए थे और उन्होंने उस देश की सेना को निर्बल कर दिया था।[18] संभवतः इसका सर्वोत्तम विश्लेषण आर. के. हैरीसन ने दिया है। जिन्होंने लिखा,

> बर्रे ... परमेश्वर के लोगों की ओर से उसका आश्चर्यकर्म करने वाला हस्तक्षेप है जिसने प्रतिज्ञा के देश में रहने वाले लोगों को भयभीत किया होगा। इस अनुच्छेद से ऐसा लगता है कि बर्रे कनान के स्थानीय लोगों को परमेश्वर के सामर्थ से भयभीत करने वाली रूपक है जिसका प्रयोग ठीक वैसा ही किया गया है, जिस प्रकार बर्रे के डंक से उसका शिकारी अधमरा सा हो जाता है।[19]

रूचिकर बात यह है कि आयत 28 की तुलना में आयत 23, केवल तीन देशों की सूची प्रस्तुत करता है: **हिब्बी, कनानी, और हित्ती**। इन तीन देशों का वर्णन संभवतः उस क्षेत्र में रहने वाले सभी लोगों की ओर से किया गया होगा। इसलिए, इसमें कोई विशिष्ट बात नहीं है कि दूसरे देशों को वहाँ से हटाने के लिए आयत 28 में कुछ भी नहीं कहा गया है।

आयतें 29, 30. परमेश्वर से इस्राएलियों को कनान पर जल्दी विजय दिलाने के लिए लोगों ने अपेक्षा की होगी। लेकिन इसके विपरीत, परमेश्वर ने कहा कि इससे पहले इस्राएली लोग कनान देश पर पूर्ण कब्जा जमा लें, मैं वहाँ के लोगों को उस देश से धीरे-धीरे बाहर **निकाल दूँगा**, ताकि **ऐसा न हो कि देश उजाड़ हो जाए** या फिर उसमें **बनैले पशु** बढ़कर दुःख देने लगे। यद्यपि यहोशू की पुस्तक से उस देश पर जल्दी कब्जा जमाने जैसे बातें प्रतीत होती है, लेकिन न्यायियों की पुस्तक यह बताती है कि आरंभिक विजय के बाद भी सभी लोगों पर विजय नहीं प्राप्त किया जा सका था और न ही सारे देश पर कब्जा जमाया जा सका था (न्यायियों 1:27-36)।

आयत 31. विजय दिलाने के बारे में परमेश्वर ने अपने संदेश का सारांश यह बताकर किया कि वह इस्राएलियों को किस सीमा तक उस देश को अपने कब्जे में करने की सामर्थ देगा। यह पूर्व में **लाल सागर** (अकाबा खाड़ी[20]) से लेकर पश्चिम में **पलिश्तियों के समुद्र** (भूमध्य सागर) तक और दक्षिण में **जंगल** से लेकर उत्तर में **महानद** तक उनको दिया जाएगा। मूल इब्रानी पाठ में "महानद" जैसा शब्द नहीं पाया जाता है लेकिन अनुवादकों ने इसकी स्थिति स्पष्ट करने के लिए यह शब्द जोड़ा। कोल ने इसका विश्लेषण इस प्रकार किया है, "बाइबल में 'नदी' का वर्णन सदैव 'महानद' अर्थात हिद्देकेल नदी के रूप में किया गया है।[21] इस्राएलियों का नियंत्रण, यदि कब्जा न भी हो तो दाऊद और सुलैमान के राज्य के दिनों में हिद्देकेल नदी तक फैला हुआ था (1 राजा 4:21; 1 इतिहास 18:3; 2 इतिहास 9:26)।"[22]

कनानियों के साथ कोई वाचा न बांधना (23:32, 33)

[32]"तू न तो उनसे वाचा बाँधना और न उनके देवताओं से। [33]वे तेरे देश में रहने न पाएँ, ऐसा न हो कि वे तुझ से मेरे विरुद्ध पाप कराएँ; क्योंकि यदि तू उनके देवताओं की उपासना करे, तो यह तेरे लिये फंदा बनेगा।"

आयत 32. चाहे उनका राज्य कितना ही बड़ा क्यों न हो जाए, इस्राएलियों को उस देश के दाता को नहीं भूलना चाहिए और उन्हें उस देश के लोगों के साथ या **उनके देवताओं** के साथ **वाचा** नहीं बांधना चाहिए था। ऐसा कहा जाता है कि उस देश के देवताओं के सम्मुख जिनके साथ वे वाचा बांधते हैं, गवाही ठहरती। इसलिए, यदि इस्राएली लोग ऐसे वाचा में बंध जाते तो ऐसे परिस्थिति में वे कनानियों के देवताओं को अंगीकार करते और उनके साथ वाचा बांधते।

आयत 33. इसके बजाए, उनको उस **देश** के अन्य लोगों को वहाँ से भगाना

था - ऐसा उनको इसलिए नहीं करना था कि वे असमाजिक थे या मानव जाति के शत्रु थे, बल्कि ऐसा उनको इसलिए करना था ताकि वे उस देश के देवताओं की आराधना करने की परीक्षा में न पड़े। कुछ सीमा तक, यदि इस्राएली लोग परमेश्वर की इस आज्ञा पर ध्यान न दें तो इसका परिणाम उनके देश का विनाश भी हो सकता था।

अनुप्रयोग

बुराई करने के लिए न तो बहुतों के पीछे हो लेना (23:2; KJV)

जबकि 23:1, 2 की व्यवस्था निष्पक्ष मुक़द्दमा सुनिश्चित करने के लिए था, लेकिन यह दूसरे परिस्थिति में भी प्रयोग किया जा सकता था। सामान्य रूप से, मसीह के शिष्यों को आँखें मूंदकर भीड़ के पीछे नहीं हो लेना चाहिए क्योंकि भीड़ गलत हो सकती है (मत्ती 7:13, 14)। यह तथ्य कि जो धार्मिक विश्वास व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है वह वचन के अनुसार ही है, को प्रमाणित नहीं करता है। यह तथ्य कि "सभी ऐसा ही करते हैं" ठीक नहीं हो सकता है।

हमारे शत्रुओं के बारे में क्या है? (23:4, 5, 22, 23)

बाइबल बताती है कि मसीही लोग धार्मिक जीवन जी सकते हैं लेकिन उसके पश्चात भी उनके शत्रु हो सकते हैं। यीशु के समान पौलुस के भी शत्रु थे। एक मसीही को ऐसे शत्रु के साथ क्या करना चाहिए?

1. शत्रु बनाना छोड़ दें (रोमियों 12:18)।
2. अपने शत्रुओं से घृणा न करें (मत्ती 5:43-48)।
3. हम अपने शत्रुओं का भला करें (निर्गमन 23:4, 5; रोमियों 12:20, 21)।
4. अपने शत्रुओं से मेल-मिलाप करने का प्रयास करें (मत्ती 5:23-25)।
5. अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना करें (मत्ती 5:44)।
6. यह जान लें कि कभी-कभी हमारे शत्रु जो हमारे लिए करते हैं क्या जाने वह हमारे भलाई का कारण हो (रोमियों 8:28; फिलि. 1:12)।
7. यह पहचान लें कि यदि हम विश्वासयोग्य बने रहें तो परमेश्वर अन्ततः हमारे शत्रुओं को हरायेगा (निर्गमन 23:22, 23; 2 थिस्स. 1:6-9)।

हमें क्या *नहीं* करना चाहिए?

1. अपने शारीरिक बल से शत्रु का सामना नहीं करना चाहिए (मत्ती 5:38-41)।
2. किसी भी शत्रु को बदला न दें (रोमियों 12:19)।
3. शत्रुओं पर बुराई आने की आशा न करें या जब ऐसा हो तो आनंदित न होना (अय्यूब 31:29, 30)।

4. शत्रुओं के बारे में बुरा न कहें (मत्ती 5:22)।
5. शत्रुओं को हमारे प्रभु का तिरस्कार करने की अनुमति न दें बल्कि यूसुफ, अय्यूब और दानिएल जैसे लोगों के उदाहरण का अनुकरण करें।

इस्राएल और प्रतिज्ञा की देश (23:20-33)

जिस तरह परमेश्वर ने उत्पत्ति की पुस्तक में बाप-दादों से प्रतिज्ञा की थी, उसी तरह निर्गमन की कहानी के आरंभ से ही उसने इस्राएल को प्रतिज्ञा की देश में ले जाना चाहा (3:8)। जब निर्गमन 23 में परमेश्वर ने वाचा की पुस्तक का सारांश व्यक्त किया तो उसने इस्राएल को उस देश के संबंध में दो जिम्मेदारियां दी।

सर्वप्रथम, इस्राएल को उस देश पर नियंत्रण प्राप्त करने की जिम्मेदारी दी गई। यह कि उनको उस देश पर नियंत्रण प्राप्त करना था, कहना, गलत वक्तव्य सा जान पड़ता है, क्योंकि यह अनुच्छेद उस देश पर अधिकार पाने में परमेश्वर की मुख्य भूमिका पर बल देता है। परमेश्वर, अपने "स्वर्गदूत" को "उस स्थान" पर, जो उसने उनके लिए "तैयार किया" था, अधिकार दिलाने के लिए उनके आगे-आगे भेजेगा (23:20)। तब परमेश्वर ने कहा कि वह इस्राएल के शत्रुओं का "शत्रु" होगा (23:22) और वह उसे देश के निवासियों को नाश करेगा और उनको बाहर खदेड़ेगा (23:23, 27-30)। वह इस्राएल के सीमाओं का विस्तार करेगा (23:31)। यहाँ तक कि, इस्राएल को, परमेश्वर की सहायता से, उस देश पर अधिकार पाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। यहोशू की पुस्तक यह बताती है कि परमेश्वर ने उनको कनान देश दिया, लेकिन इसके बाद भी उनको उस देश में जाकर उस पर "अधिकार प्राप्त करना" था (यहोशू 1:11)। पुस्तक यह बताती है कि किस प्रकार इस्राएल को उस देश पर जिसको परमेश्वर ने उन्हें "दिया था," पर अधिकार प्राप्त करने के लिए लड़ना पड़ा था।

मसीहियों का, "प्रतिज्ञा की देश" स्वर्ग है। हमें यहोशू की सेना के समान उस देश पर अधिकार पाने के लिए तलवार की आवश्यकता नहीं होगी। परमेश्वर हमें विजय देगा, लेकिन अभी भी हमको अपना काम करना होगा।

दूसरी बात, इस्राएल को उस देश से भक्तिहीन लोगों को बाहर निकालना था। कनान में जो लोग रहते थे, परमेश्वर उनको बाहर निकालेगा (23:23), उनको वह व्याकुल कर देगा (23:27), और उनको खदेड़ने के लिए वह "बर्रे" भेजेगा (23:28, 29)। उसने इस्राएलियों को कहा, "तू उनको पूरी रीति से सत्यानाश करना" (23:24)। जब इस्राएली उन पर आक्रमण करेंगे तो वे वहाँ से भाग खड़े होंगे (23:27), और इस्राएली उनको वहाँ से "बाहर निकाल देंगे" (23:31-33)। यहोशू की पुस्तक यह बताती है कि उस देश पर विजय तो प्राप्त कर ली गई थी परंतु न्यायियों की पुस्तक इस बात पर जोर देता है कि इस्राएलियों ने पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। उस देश के मूर्तिपूजकों को न हटाने के कारण उन पर विनाश आया।

परमेश्वर ने कनान में रहने वाले अन्य जातियों को उस देश से बाहर निकाला

और उन्हें नाश कर दिया क्योंकि वे दुष्ट लोग थे जिनको वह दण्डित कर रहा था (व्यव. 9:5)। फिर भी, मूर्तिपूजकों का आचरण, उसके लोगों के लिए आत्मिक खतरा बना रहा (23:24, 31-33)। इस्राएलियों का उनको उस देश से बाहर निकालने में न तो जातीय पक्षपात था और न ही राष्ट्रीय अभिमान था; इसका मुख्य उद्देश्य इस्राएलियों का परमेश्वर पर विश्वास बनाए रखना था।

क्या मसीहियों को इस्राएलियों द्वारा लोगों को कनान देश से बाहर निकालने के द्वारा कुछ सीखना चाहिए? यह अनुच्छेद यह शिक्षा देने के लिए नहीं प्रयोग किया जाना चाहिए कि मसीही लोगों को अपने आपको पूर्णतया इस संसार से अलग कर लेना चाहिए। उसी समय, यह अनुच्छेद यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि हमको इस संसार से कभी भी समझौता नहीं करना चाहिए। हमें यह समझना चाहिए कि हमारे चारों ओर रहने वाले लोग हमें नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं (1 कुरिं. 15:33)। अविश्वासियों के साथ किसी भी प्रकार का समझौता से हमको बचना चाहिए (2 कुरिं. 6:14-18)।

उपसंहार। इस्राएलियों को "अन्य जातियों के लिए प्रकाश" ठहरना चाहिए था (यशा. 42:6), फिर भी उनको अन्य जातियों को उस देश से बाहर निकालना था। मसीही लोग भी इसी तरह का तनाव अनुभव करते हैं: हम "संसार में" तो हैं परंतु इस "संसार के" नहीं हैं। हमारा कार्य पापियों तक पहुँचना है ताकि वे भी हमको मसीह से दूर किए बिना उद्धार प्राप्त करें। इस प्रकार का कठिन कार्य परमेश्वर की सहायता से ही हो सकता है!

"वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा" - इस जीवन में आशीष (23:25, 26)

पुराने वाचा के अन्तर्गत इस्राएल के लोगों के समान परमेश्वर की इच्छा पूरी करने पर, आज मसीही लोगों को भौतिक आशीषों की प्रतिज्ञा नहीं दी गई है। कभी-कभी हम बीमार हो जाते हैं और कभी-कभी हमारी पत्नियां बांझ रहती हैं या उनका गर्भपात हो जाता है। फिर भी, जिस प्रकार परमेश्वर ने इस सृष्टि की रचना की है, मसीही लोग इस जीवन में और आने वाले जीवन में भी आशीषें प्राप्त करेंगे (मरकुस 10:29, 30)। क्यों? क्योंकि मसीही लोग परिश्रमशील हैं, अधिकारों का सम्मान करते हैं, स्थिर रहने वाले संबंध विकसित करते हैं, सुखी परिवार का निर्माण करते हैं, अपने देह को परमेश्वर का मंदिर जानकर संवारते हैं और अपनी चिंता को परमेश्वर पर डाल देते हैं। जो इस प्रकार का व्यवहार करते हैं, वे दूसरों की तुलना में निश्चय दीर्घायु एवं सुखमय जीवन जीएंगे।

समाप्ति नोट्स

[1]आर. एलेन कोल, *एक्सोडस: एन इंट्रोडक्सन एण्ड कमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, इल्लिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 177. [2]अम्बरटो केसुटो, *ए कमेंट्री आन द बुक आफ एक्सोडस,* अनुवादक इस्राएल एब्राहम्स (जरूशलेम: मैग्नेस प्रेस, 1997), 299. [3]रोनाल्ड एफ. यंगब्लड, *एक्सोडस,* एवरीमैंस बाइबल कमेंट्री (शिकागो: मूडी बाइबल इंस्टिट्यूट, 1983), 107-8.

[4]उपरोक्त, 108. [5]उपरोक्त। [6]उपरोक्त। [7]जॉन आई. दुरहैम, एक्सोडस, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, खण्ड 3 (वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1987), 334. [8]सी. एफ. कील और एफ. डेलित्स, द पेंटाट्यूक, अंक 2, अनुवादक जेम्स मार्टिन, बिब्लिकल कमेंट्री आन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, एन.डी.), 149-50. [9]नहूम एम. सारना, *एक्सोडस*, द जेपीएस तोराह कमेंट्री (न्यू यॉर्कः ज्यूविश पब्लिकेशन्स सोसाईटी, 1991), 147. [10]केसुटो, 305.

[11]सारना, 147. [12]कोल, 181. [13]दुरहैम, 335. [14]जे. एलेक मोत्यर, द मेसेज आफ एक्सोडस, द बाइबल स्पीक्स टूडे (डॉनर्स ग्रूव, इल्लिनोयः इन्टरवार्सिटी प्रेस, 2005), 51; उद्धृत जे. बार्टन पेन, *द थियोलॉजी आफ द ओल्ड टेस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन, 1962), 170. *दि एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, अंक 2, जेनेसिस-नंबर्स (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन, 1990), 446 में देखें वाल्टर सी. कैसर, जूनियर, "एक्सोडस"; विल्बर फील्डस, एक्प्लोरिंग एक्सोडस, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जॉप्लीन, मिस्सौरीः कॉलेज प्रेस, 1976), 517. [15]*दि इंटरनेशनल स्टेंडर्ड बाइबल एनसाक्लोपीडीया*, संशोधित संस्करण, सम्पादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986), 3:870 में आर. के. हैरीसन, "पिलर।" [16]पीटर ऐन्स, *एक्सोडस*, द NIV अप्लीकेशन कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन, 2000), 472. [17]उपरोक्त। [18]कोल, 183. [19]दि इंटरनेशनल स्टेंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडीया, संसोधित संस्करण, सम्पादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 2:757 में आर. के. हैरीसन, "हार्नेट।" (देखें यहोशू 10:10; न्यायियों 4:15; 1 शमूएल 5:9, 11; 7:10.) [20]कैसर, 447. अकाबा खाड़ी सिनै प्रायद्वीप के पूर्व की ओर स्थित है।

[21]कोल, 184. (देखें उत्पत्ति 15:18; व्यव. 1:7; यहोशू 1:4.) [22]बेरी जे. बित्सेल, द मूडी एटलस आफ बाइबल लैंड्स (शिकागोः मूडी प्रेस, 1985), 10.